15 जुलाई तक की जा सकती है मूंगफली की बुवाई :डा.सत्येंद्र

किसान को खर्चा निकाल कर लगभग 40 हजार रुपये की हो सकती है प्रति हेक्टेयर बचत

बख्शी का तलाब। लखनऊ राजधानी सहित प्रदेश भर में बहुत से किसान आजकल परंपरागत खेती छोड़कर नकदी फसलों की खेती कर रहे हैं।चंद्रभानु गुप्त कृषि महाविद्यालय के प्रवक्ता एवं कृषि विशेषज्ञ डा.सत्येंद्र सिंह चौहान का कहना है कि महंगाई के इस युग में किसानों को मूंगफली जैसी फसलों की खेती पर जोर देना चाहिए।उन्होंने यह भी बताया कि सामान्य रूप से 15 जून से 15 जुलाई के बीच में मूंगफली की बुवाई की जा सकती है।बीज बोने से पहले 3 ग्राम थायरम या 2 ग्राम मैकोजेब दवा प्रति किलो बीज के हिसाब से यूज किया जाना चाहिए। इस दवाई के प्रयोग से बीज में लगने वाले रोगों से बचाया जा सकता है और इससे मूंगफली बीज का अंकुरण भी अच्छा होता है।

डा.चौहान ने यह भी बताया कि सूर्य की अधिक रोशनी और उच्च तापमान मूंगफली के पौधे की बढ़त के लिए अनुकूल माने जाते हैं। अच्छी

पैदावार के लिए कम से कम 30 डिग्री सेल्सियस तापमान होना आवश्यक है। मूंगफली की खेती सालभर की जा सकती है, लेकिन खरीफ सीजन की फसल के लिए जुलाई महीने के दूसरे पखवाड़े तक इसकी बुवाई की जा सकती है।उन्होंने मूंगफली की खेती के लिए जमीन तैयार करने की जानकारी देते हुए बताया कि फसल उगाने के लिए खेत की तीन से चार बार जुताई करनी चाहिए। इसके लिए मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई सही होती है। मूंगफली के खेत में नमी बनाए रखने के लिए जुताई के बाद पाटा लगाना जरूरी है। इससे मिट्टी में नमी काफी समय तक बनी रहती है। खेती की तैयारी करने के समय 2.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से जिप्सम का प्रयोग करें।उन्होंने बीज के लिए मूंगफली की अच्छी उन्नत किस्मों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि आर.जी. 425, 120-130, एमए 10 125-130, एम-548 120-126, टीजी 37ए 120-130, जी 201 110-120 प्रमुख हैं।वहीं इनके अलावा मूंगफली की अन्य किस्म एके 12, -24, जी जी 20, सी 501, जी जी 7, आरजी 425, आरजे 382 आदि भी अच्छी फसल देती हैं।उन्होंने मूंगफली की खेती में किसानों को होने वाले लाभ के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि 40 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर के हिसाब से आमदनी हो सकती है। सिंचित क्षेत्रों में मूंगफली की औसत पैदावार 20 से 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो सकती है। यदि मूंगफली का सामान्य भाव 80 रुपये प्रति किलो रहा तो किसान को खर्चा निकाल कर लगभग 90 हजार रुपये की बचत हो सकती है।

खर पतवार पर रखें नियंत्रण

मूंगफली की खेती में खरपतवार नियंत्रण करना बहुत जरूरीहै। खर-पतवार अधिक होने से फसल पर बुरा असर पड़ता है। बुवाई के करीब 3 से 6 सप्ताह के बीच कई प्रकार की घास निकलने लगती है। कुछ उपाय या दवा के प्रयोग से आप आसानी से इस पर नियंत्रण कर सकते हैं। अगर आपने खरपतवार का प्रबंधन नहीं किया तो 30 से 40 प्रतिशत फसल खराब हो जाती है।

जल बचाना सबकी जिम्मेदारी : डॉ सत्येंद्र

बीए न्यूज / अशोक राजपूत

संयुक्त राष्ट्र 2023 जल सम्मेलन अभी हाल ही में 24 मार्च को संपन्न हुआ। आने वाले समय में जल बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न कर सामने आने वाली है इसके लिए सभी देशों ने 700 प्रमुख बिंदुओं पर चर्चा की जिसमें सभी देशों ने यह तय किया की जल का संरक्षण करना ही होगा यदि जीवन को सुरक्षित रखना है। सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य 2030 तक सभी के लिए पानी और स्वच्छता की उपलब्धता और टिकाऊ प्रबंधन सुनिश्चित करना है। हालाँकि, एसडीजी 6 पूरे जल चक्र को कवर करने के लिए पानी और स्वच्छता सेवाओं से कहीं आगे जाता है। जल केवल एक क्षेत्र नहीं है, बल्कि एक संबंधक, एक प्रमुख प्रवर्तक और समाधान है जो जलवायु परिवर्तन से लेकर वैश्विक स्वास्थ्य और पोषण तक कई वैश्विक चुनौतियों का समाधान करता है, जबकि अन्य क्षेत्रों की प्रगति का समर्थन करता है। अगर हम 2030 के एजेंडे तक पहुंचने में विफल रहते हैं तो हम न केवल कई अन्य क्षेत्रों और वैश्विक एजेंडे की सफलता को खतरे में डाल रहे हैं बल्कि हम अपने भविष्य को भी खतरे में डाल रहे हैं। खेती–बाड़ी एवं घरेलू उद्देश्यों के अलावा, भोजन, ऊर्जा, उपयोगी वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने के लिए समाज के सभी क्षेत्रों में पानी की आवश्यकता होती है। पिछले वर्षों में, कई मंचों ने चुनौतियों की पहचान की है, सिफारिशें तैयार की हैं और जल

संबंधी लक्ष्यों और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कार्रवाई की आवश्यकता को स्वीकार किया है। इसकी (गैर) उपलब्धि के निहितार्थ लगभग सभी अन्य एसडीजी के साथ–साथ जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता हानि और आपदाओं से निपटने की वैश्विक क्षमता के लिए चुनौतीपूर्ण है। आज भारत की जनसंख्या लगभग 142 करोड़ के ऊपर पहुंच रही है जहां पर बढ़ता शहरीकरण, बढ़ती आबादी के साथ वर्तमान चुनौतियां जैसे कोविड–19 महामारी, प्रवासन और पारिस्थितिक तंत्र की बढ़ती हानि और जैव विविधता क्रॉस–सेक्टोरल कार्रवाई की तात्कालिकता को रेखांकित करती है। एस डी जी 6 उपलब्धियों में तेजी लाने के लिए क्षेत्रों और भौगोलिक सीमाओं में बेहतर प्रशासन और समन्वय के साथ हमारे दृष्टिकोण को एकीकृत करना अनिवार्य है। प्रवासन और पारिस्थितिक तंत्र और जैव विविधता की बढ़ती हानि क्रॉस–सेक्टोरल कार्रवाई के लिए अत्यावश्यकता को रेखांकित करती है। "क्ळ6 उपलब्धियों में तेजी लाने के लिए क्षेत्रों और भौगोलिक सीमाओं में बेहतर प्रशासन और समन्वय के साथ हमारे दृष्टिकोण को एकीकृत करना अनिवार्य है। प्रवासन और पारिस्थितिक तंत्र और जैव विविधता की बढ़ती हानि क्रॉस–सेक्टोरल कार्रवाई के लिए अत्यावश्यकता को रेखांकित करती है।"क्ळ6 उपलब्धियों में तेजी लाने के लिए क्षेत्रों और भौगोलिक सीमाओं में बेहतर प्रशासन और समन्वय के साथ हमारे दृष्टिकोण को एकीकृत करना अनिवार्य है। मुख्य उद्देश्य "क्ळ 6 त्वरण पर अधिक प्रगति को बाधित करने वाली कई बाधाओं की पहचान करना और समाधान खोजना है। स्तरों, अभिनेताओं और क्षेत्रों के बीच नीति और संस्थागत विखंडन का अर्थ है कि एक क्षेत्र (जैसे कृषि, ऊर्जा, स्वास्थ्य और पर्यावरण) में लिए गए निर्णय अक्सर अन्य क्षेत्रों में पानी की उपलब्धता और पानी की गुणवत्ता पर पड़ने वाले प्रभावों पर विचार नहीं करते हैं। कठिन अंतराल और विखंडन स्तरों पर प्रगति को बाधित करते हैं, जबकि प्रभावी सूचित निर्णय लेने के लिए ठेटा और जानकारी अक्सर उपलब्ध नहीं होती है या क्षेत्रों के बीच साझा नहीं की जाती है। इस बीच, संस्थागत और मानव क्षमता में अंतराल, विशेष रूप से स्थानीय सरकारों और जल और स्वच्छता प्रदाताओं के स्तर पर, एसडीजी 6 के साथ–साथ पुराने बुनियादी ढांचे और शासन मॉडल के कार्यान्वयन को धीमा कर देता है। इसलिए "क्ळ6 को पूरा करने के लिए प्रणाली क्रॉस सेक्टोरल पार्टनरशिप में तेजी लाने की तत्काल आवश्यकता है, जो बदले में जलवायु कार्रवाई सहित कई अन्य "क्ळ में योगदान देगा। संसाधनों के सतत उपयोग को बढ़ावा देना और जलवायु परिवर्तन की चपेट में आने वाले क्षेत्रों में निवेश बढ़ाना, जैसे कि जल क्षेत्र और पानी पर निर्भर क्षेत्र वैश्विक समृद्धि के लिए प्राथमिकता है।

विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान एवं दस्तक अभियान का दिया गया प्रशिक्षण